Publication : Business Bhaskar

Date : Tuesday, May 7, 2013

Edition: Delhi/Chandigarh

My Money , My Insurance

मेरा पैसा मेरा बीमा

जल्दबाजी न करें तो बचा सकते हैं प्रीमियम

जीवन बीमा लेना जरूरी है लेकिन जल्दबाजी में निर्णय लेने से आपको ज्यादा प्रीमियम देना पड़ सकता है। आज हम ऐसे ही कुछ उपायों की चर्चा कर रहे हैं जो प्रीमियम बचाने में मददगार साबित हो सकते हैं

बिजनेस भास्कर • नई दिल्ली

अनिश्चितताओं से भरी जिंदगी में कब क्या हो जाए, इसकी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। यही वजह है कि फाइनेंशियल प्लानर सबसे पहले परिवार के कमाऊ सदस्य को जीवन बीमा लेने की सलाह देते हैं ताकि उसकी अकाल मृत्यु होने पर परिवार को आर्थिक परेशानियों का सामना न करना पड़े और भविष्य के विभिन्न लक्ष्य पैसों के अभाव में अधूरे न रह जाएं। जीवन बीमा कंपनियां परिवार के कमाऊ सदस्य, जिसका बीमा होता है, की मृत्यु के बाद नामित व्यक्ति या उसके परिवार को एक निश्चित राशि देने का वादा करती है। इस निश्चित राशि को बीमा की भाषा में सम एश्योर्ड कहते हैं।

इस बात में कोई संदेह नहीं कि जीवन बीमा एक आवश्यक चीज है लेकिन यह थोड़ी सी नासमझी या जल्दबाजी की वजह से आपके लिए महंगा हो सकता है। जीवन बीमा कंपनियां जिस मोर्टेलिटी रेट की पेशकश करती हैं उसमें मोल-भाव करना संभव नहीं होता है। मोर्टेलिटी रेट वह शुल्क है जो किसी व्यक्ति को जिंदगी का जोखिम उठाने के बदले जीवन बीमा कंपनियां चार्ज करती हैं। जीवन बीमा पॉलिसी की दरें कई कारकों पर निर्भर करती है जैसे उम्र, लिंग, स्वास्थ्य का इतिहास जिसमें परिवार की हेल्थ हिस्ट्री भी शामिल होती है और जीवनशैली। ये सब प्राथमिक कारक होते हैं। इसके अलावा जीवन बीमा के प्रीमियम किसी व्यक्ति का पेशा, मद्यपान या धूम्रपान की आदतें, कार्यशैली, जीवन बीमा की अवधि आदि पर भी निर्भर करती है। इन सब कारकों को समझते हुए अगर आप आगे कदम बढ़ाते हैं तो जीवन बीमा के प्रीमियम की राशि में कुछ कमी करवा सकते हैं। निम्नलिखित बिंदुओं पर गौर फरमाते हुए आप निश्चित रूप से प्रीमियम की लागत कुछ हद तक कम कर सकते हैं।

सस्ता पड़ेगा सालाना प्रीमियम

जीवन प्रीमियम पॉलिसियों के प्रीमियम का भुगतान हमेशा वार्षिक रूप से किया जाना चाहिए। इससे बीमा कंपनियों का एडमिनिस्ट्रेटिव कॉस्ट कम हो जाता है। अगर आप मासिक, तिमाही या छमाही आधार पर प्रीमियम का भुगतान करते हैं तो बीमा कंपनियों का एडमिनिस्ट्रेटिव कॉस्ट बढ़ जाता है क्योंकि बीमा कंपनियों को प्रत्येक ट्रांजेक्शन के आँकड़ों का रख-रखाव करना होता है साथ ही पॉलिसीधारकों को उसकी रसीद भेजनी होती है। इससे कागजी काम-काज बढ़ते हैं जिससे एडमिनिस्ट्रेटिव कॉस्ट में इजाफा होता है। प्रीमियम का सालाना भुगतान करने पर जीवन बीमा कंपनियों को ट्रांजेक्शन की सारी प्रक्रिया साल में केवल एक बार करनी होती है जिससे अतिरिक्त कागजी काम व्यस्त नहीं करने होते हैं। यही वजह है कि जीवन बीमा कंपनियां अपने अतिरिक्त लागत की उगाही पॉलिसीधारकों से करते हैं। इन अतिरिक्त लागतों की वजह से प्रीमियम की राशि में इजाफा होता है। अगर आप प्रीमियम का भुगतान सालाना करते हैं तो आपको कुल प्रीमियम में एक से तीन प्रतिशत तक की छूट मिल सकती है।

पॉलिसी लेने में न करें देर

आप जीवन बीमा की शुरुआत जितनी जल्दी करेंगे प्रीमियम में उतना ही अधिक बचत कर पाएंगे क्योंकि जीवन बीमा पॉलिसी के प्रीमियम आवेदन की उम्र के साथ ही बढ़ते जाते हैं। आवेदक की उम्र जितनी अधिक होगी बीमा का प्रीमियम भी उतना ही अधिक होगा और उम्र जितनी कम होगी प्रीमियम भी उतना ही कम होगा। युवावस्था में आप शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं और कोई बीमारी भी नहीं होती। इस वजह से आपकी पॉलिसी का प्रीमियम कम होगा। इसीलिए यह सलाह दी जाती है कि बीमा पॉलिसी युवावस्था में लेनी चाहिए।

अनावश्यक राइडर न लें

जीवन बीमा लेने की मुख्य वजह जीवन से जुड़े जोखिमों को कवर करना होता है। मोर्टेलिटी चार्ज वह शुल्क होता है जिसमें जीवन बीमा कवर का मूल शुल्क शामिल होता है। मोर्टेलिटी चार्ज से ज्यादा चाहे कुछ भी हो वह आपके प्रीमियम में बढ़ोतरी ही करता है। राइडर भी प्रीमियम में बढ़ोतरी करते हैं। अतिरिक्त लाभ के लिए अतिरिक्त शुल्क भी चुकाना होता है। इसलिए, वास्तव में जिन राइडर की आपको जरूरत है केवल उनका चयन कर आप अपने प्रीमियम की लागत कम कर सकते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य का उठाएं लाभ

जीवन बीमा के प्रीमियम स्वास्थ्य के हालात पर ज्यादा निर्भर करते हैं। खुद को स्वस्थ रखने का सबसे बड़ा फायदा यह है कि आपको जीवन बीमा के प्रीमियम पर छूट मिल सकती है। अगर आप किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो आपको बीमा कवर लेने के लिए अतिरिक्त प्रीमियम का भुगतान करना होगा लेकिन इन बीमारियों को कुछ समय बाद ही शामिल किया जाएगा। उदाहरण के लिए अगर किसी व्यक्ति को डायबिटीज है और वह अपनी इस बीमारी को बीमा कवर में शामिल कराना चाहता है तो न केवल उसे अतिरिक्त प्रीमियम देना होगा बल्कि बीमारी भी कुछ समय बाद कवर की जाएगी वह भी बीमा कंपनियों के नियम एवं शर्तों के तहत।

उचित अवधि के लिए लें कवर

जीवन बीमा पॉलिसी के प्रीमियम पॉलिसी की अवधि पर भी निर्भर करते हैं। पॉलिसी की अवधि जितनी अधिक होगी प्रीमियम की राशि भी उतनी ही अधिक होगी। इसलिए, अगर आर्थिक स्थिति मौजूद समय में ठीक न चल रही हो तो ज्यादा अवधि के टर्म प्लान की खरीदारी न करें। दूसरी बात, रिटायरमेंट के बाद आम तौर पर आर्थिक जिम्मेदारियां नहीं रह जाती हैं। ऐसे में बीमा की अवधि अगर आर्थिक जिम्मेदारियों की अवधि तक सीमित रखी जाए तो प्रीमियम में बचत की जा सकती है।

ऑनलाइन इंश्योरेंस का फायदा

कई जीवन बीमा कंपनियां अब ऑनलाइन टर्म इंश्योरेंस की पेशकश कर रही हैं। ऑनलाइन टर्म प्लान पारंपरिक टर्म प्लान के मुकाबले 40-60 फीसदी तक सस्ते हैं। इसकी वजह है कि जीवन बीमा कंपनियों को इसके वितरण पर खर्च नहीं करना होता साथ ही यह पॉलिसी आप सीधे कंपनी से खरीदते हैं इसलिए एजेंट भी इसमें शामिल नहीं होते। कई कंपनियां जैसे भारती एक्सा, एगॉन रेलिगेयर, एचडीएफसी लाइफ, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल, अवीवा, कोटक, मेटलाइफ, इंडिया फर्स्ट, बजाज आलियांज लाइफ, फ्यूचर जेनराली, डीएलएफ प्रामेरिका लाइफ आदि ऑनलाइन टर्म इंश्योरेंस की पेशकश कर रही हैं।

ऑनलाइन पॉलिसी ले रहे हैं तो इसके क्लेम का तरीका अपने परिवार के सदस्यों को बता दें ताकि उन्हें कोई परेशानी न हो।

A Joint Venture of
Bank of Baroda
Legal & General
Andhra Bank

IndiaFirst
LIFE INSURANCE